गिलोय "*टीनोस्पोरा कार्डीफोलिया (विल्ड). मियर्स*"

विशेषतायें एवं लाभ:

- इसका उपयोग भूख बढ़ाने, पाचन, शारीरिक तापमान नियंत्रण, पोषण, शारीरिक कार्य प्रणाली सुधार, काम क्षमता वृद्धि, जलन, उल्टी, वायुविकार, अमलता, पीलिया, रक्त श्राव, हृदय की अनियमितता, गठिया एवं नेत्र रोगों में किया जाता है।

कृषि तकनीक:

मृदा:

- यह वृहद प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है। मध्यम काली, लाल अथवा रेतीली-दोमट, जैविक खाद युक्त, अच्छी जल निकास वाली मृदा उपयुक्त है।

रोपण:

- इसे बीज अथवा शाकीय रूप से तने की कलम द्वारा लगाया जा सकता है।
- व्यापारिक दृष्टि से कलम द्वारा लगाना लाभप्रद है क्योंकि बीजों की अंकुरण क्षमता कम रहती है।
- 4-8 गाठों युक्त लगभग 9 इंच लंबी व 1 से.मी. मोटी तने की कलम की 1-2 गाठों को मृदा मिश्रण में रखते हुए तिरछा लगाया जाता है। यह कार्य जून-जुलाई में किया जाता है।
- 90 प्रतिशत कलमों में 20-30 दिनों मे जड़ व 45 दिनों मे फुटान शुरू हो जाती है। इन कलमों को तीव्र गति से बढने वाले पेड़ों (जैसे जैट्रोफा तथा सहजन) के सहारे 1x1 मीटर पर लगाया जाता है।
- लता चढ़ाने के लिये नीम का पेड़ सर्वोत्तम माना गया है।

खरपतवार नियंत्रण:

- समय-समय पर खरपतवार नियंत्रण व निराई गुड़ाई आवश्यक है।

सिंचाई:

- रोपण के तुरन्त बाद, तत्पश्चात 15 दिनो के अंतर से सींचा जाना चाहिए।

कटाई व संग्रहण:

- अप्रैल में पत्तियों का झड़ना, कटाई के समय का सूचक है।
- सतह से एक फुट छोड़कर तने को काट लिया जाता है।
- तने के छोटे-छोटे टुकड़े कर छाया में सुखाया जाता है एवं नमी रोधक थैलियों में संग्रहित करके रखा जाता है।

उत्पादन:

- प्रति हेक्टेयर 10-20 क्विंटल सूखा तना व 5000 कि.ग्रा. सूखी पत्तियाँ प्राप्त होती हैं।

संकलन:
डॉ. डी.के. मिश्रा
वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005